Q अस्मिता की अवधारणा तथा 'स्व' के साथ इसके संबंध की समझ

Ans:- अस्मिता का अर्थ हस्ती, हैसियत एवं अपनी सत्ता की पहचान से है। अस्मिता की पिछड़ेपन से जोड़कर व्याख्यायित होने के कारण उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश का विभाजन हो गया। हिन्दी को हिन्दुओं और उर्दू को मुसलमानों की अस्मिता के साथ जोड़ दिया गया है। भाषा को यदि धर्म से जोड़ा जायेगा तो इससे सामाजिक विभाजन का खतरा पैदा हो सकता है। मुस्लिम अस्मिता का सवाल पाकिस्तान बनाने की माँग के साथ सामने आया है।

अस्मिता में परम या अंतिम पहचान जैसी चीज नहीं होती। हिन्दी जाति की या भाषा को आधार बनाकर अस्मिता की बात जब भी की जायेगी तो उसके गर्भ से क्या निकलता है? यह देखने की जरूरत है। जबकि सच्चाई यह है कि अस्मिता कभी स्थिर नहीं होती, यह संदर्भ के साथ बदलती रहती है।

'स्व' का मतलब होता है 'स्वयं की पहचान', स्वयं का व्यक्तित्व अर्थात् जो कुछ कोई व्यक्ति है। मोटे रूप में 'स्व' को ऐसे कथन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जैसे - "मैं इस तरह का व्यक्ति हूँ और "मेरी खूबियां और कमजोरियाँ हैं।" इस तरह 'स्व' किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है।

सर्व प्रथम हम स्वयं को जाने। हम में से अधिकांश तो स्वयं की पहचान नहीं रखते है। यदि जानते है तो ठीक रूप में व्यवहार नहीं कर पाते है। स्व अवधारणा हम कौन है, अपने बारे में हमारे विचारों और भावनाओं के सभी को शामिल शारीरिक रूप से, व्यक्तिगत रूप से, और सामाजिक रूप से हमारे व्यक्तिगत ज्ञान है। स्व अवधारणा को भी हम कैसे व्यवहार करते है, हमारे क्षमताओं के हमारे ज्ञान और हमारे व्यक्तिगत विशेषताओं में शामिल है।

⇒ व्यक्तिगत, सामाजिक एवं वृत्तिक अस्मिता की अवधारणा -

Ans:- व्यक्तिगत अस्मिता एक चीज है - एक शक्ति है और और एक प्रकृति को आत्मसात करना है। यह प्रकृति हमें अपनी और दूसरों की छवि प्रदान करती है। इस मानक दृष्टिकोण के माध्यम से हम दूसरों से संबंध बनाते है। दूसरे शब्दों में 'पहचान' अपने अथवा अन्यों के संबंध में विकसित किया गया सामान्य विचार है। यह समानताओं और असमानताओं के बारे में है।

एक ढंग से पहचान शब्द का संबंध एक ऐसे गुणों से है जिसके आधार पर लोग स्वयं को अथवा अन्य लोग कुछ लोगों को उनके उनके विशिष्टताओं अथवा

विशेषताओं और सजातीय पहचान के कारण किसी समूह विशेष अथवा वर्ग विशेष से जोड़ देते हैं। इस शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के समूहों, वर्गों, श्रेणियों और संस्थानों तथा केवल व्यक्तियों के लिए किया जा सकता है।

⇒ सामाजिक अस्मिता : सामाजिक अस्मिता एक व्यक्ति के स्वयं अवधारणा का हिस्सा है। यह प्रासंगिक सामाजिक समूह के कथित सदस्यता से प्राप्त होता है। सामाजिक पहचान सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जो कुछ अंतर-समूह व्यवहार की पूर्व-सूचना दे सकता है। सामाजिक वर्गीकरण आम तौर पर एक ही समूह में लोगों की समानता और अलग-अलग समूहों में लोगों के बीच मतभेदों पर जोर देने के परिणाम है।

सामाजिक पहचान एक समूह के सदस्य के रूप में पहचान की प्रक्रिया है। सामाजिक रूप से एक समूह के लोग की पहचान करने का तरीका है।

⇒ वृतिक अस्मिता : → प्रोफेशनल (पेशेवर)
वृतिक अस्मिता किसी व्यवसाय का एक ऐसा सदस्य होता है जिसे विशिष्ट शैक्षणिक प्रशिक्षणों के आधार पर चुना जाता है। जो अपनी बुद्धि का उपयोग कर आय कमाते हैं। जैसे- doctor, engineer, lawyer ये अपनी सेवा प्रदान कर आय कमाते हैं।

पारंपरिक रूप से प्रोफेशनल शब्द का मतलब है वह व्यक्ति जिसने किसी व्यवसायिक क्षेत्र में एक डिग्री प्राप्त की है।

संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों में यह शब्द सामान्यतः उच्च-स्तरीय शिक्षा-प्राप्त और वेतनभोगी कर्मियों को वर्णित करता है जो अपने काम में काफी स्वायत्तता तथा एक बेहतर वेतन का लाभ उठाते हैं और आम तौर पर बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण कार्यों में संलग्न रहते हैं।